डायट बुलेटिन

वाल्यूम – (i) संस्करण – (iii)

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली में 5 दिवसीय एफ.एल.एन प्रशिक्षण का आयोजन

बरेली। संस्थान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से दिनांक 06.07.2026 को बुनियादी शिक्षा एवं संख्या ज्ञान तथा NCERT पाठ्यपुस्तकों पर आधारित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। यह प्रशिक्षण 06.07.2026 से 10.07.2026 तक संस्थान परिसर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जनपद बरेली के सभी 15 विकास खंडों से Academic Resource Person - ARP ने प्रतिभागिता सुनिश्चित की। संस्थान की प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्बोधन में प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय ने कहा कि NEP 2020 की सफलता का आधार सशक्त एवं प्रशिक्षित शिक्षक है। यह प्रशिक्षण NIPUN Bharat Mission के अंतर्गत Foundational Literacy and Numeracy को मजबूत करने के साथ-साथ शिक्षकों को 21वीं सदी के कौशलों से लैस करेगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर लौटने वाले प्रत्येक शिक्षक एवं ARP अपने-अपने विकास खंड में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाएंगे और जनपद बरेली को शैक्षणिक उत्कृष्टता के क्षेत्र में अग्रणी बनाएंगे। वरिष्ठ प्रवक्त श्री मनोज कुमार ने कहा कि प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को एनसीईआरटी की विभिन्न पाठ्यपुस्तकों की जानकारी देना है। डायट प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा ने उद्घाटन सत्र का संचालन किया। विभिन्न विषयों के अंतर्सबंध पर आधारित एकीकृत शिक्षण तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समावेशी शिक्षा के माध्यम से मुख्य धारा में लाने की नवीनतम कार्यनीतियों पर भी गहन मंथन एवं व्यवहारिक अभ्यास कराया गया। इन प्रयासों

एफ.एल.एन प्रशिक्षण देते हुए वक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा एवं मौजूद शिक्षक ।

से कक्षा-कक्ष शिक्षण को अधिक बाल-केंद्रित, गतिविधि आधारित एवं अनुभवात्मक बनाने का लक्ष्य रखा गया है ताकि अधिगम प्रक्रिया को रोचक एवं प्रभावी बनाया जा सके। प्रशिक्षण की अवधि में Academic Resource Person - ARP निरंतर उपलब्ध रहकर प्रतिभागी शिक्षकों की शैक्षणिक एवं तकनीकी शंकाओं का निवारण करेंगे तथा सत्रों में TLM एवं डिजिटल संसाधनों के समुचित उपयोग में सहयोग प्रदान करेंगे। इस संपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य प्रशिक्षक (Master Trainer) प्रवक्ता डॉ कृष्ण कुमार, श्री श्रीकांत मिश्रा, डॉ रूबी, एसआरजी डॉ लक्ष्मी शुक्ला एवं श्री धर्मवीर रहे।

स्कूल चलो रैली से शिक्षा का संदेश शत-प्रतिशत नामांकन के लिए ग्रामीणों को किया गया जागरुक

नवाबगज। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) की टीम के निर्देशन में विकास क्षेत्र नवाबगंज के प्राथमिक विद्यालय पृथ्वीपुर नवदियां में शनिवार को स्कूल चलो रैली का आयोजन किया गया। रैली का उद्देश्य प्रत्येक बच्चे का विद्यालय में शत-प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित करना तथा विद्यार्थियों के नियमित ठहराव के प्रति अभिभावकों और ग्रामीणों को जागरूक करना रहा। डायट प्रवक्ता श्रीकांत मिश्रा एवं डॉ, कृष्ण कुमार ने रैली का नेतृत्व करते हुए पूरे गांव का भ्रमण किया और ग्रामीणों से अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने की अपील की। रैली में शामिल नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों और शिक्षकों ने "एक, दो, तीन, चार शिक्षा पर हम सबका अधिकार", "आधी रोटी खाएंगे, पर स्कूल जरूर जाएंगे" तथा "पढ़ी-लिखी लड़की, रोशनी घर की" जैसे जागरूकता नारों से पूरे गांव का माहौल शिक्षामय बना दिया।

ग्रामीणों को जागरूक करते हुए डायट प्रवक्ता श्रीकांत मिश्रा एवं डॉ कष्ण कमार।

रैली से पूर्व विद्यालय परिसर में बड़ी संख्या में अभिभावकों को आमंत्रित कर सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में संचालित विभिन्न योजनाओं उन्नयन के प्रयासों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में नौशीन फातिमा, एकता अग्रवाल, सुमन लता, दीपमाला तिवारी सहित विद्यालय स्टाफ, सैकड़ों अभिभावक एवं छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली प्रशिक्षुओं को तमिल भाषा से कराया गया परिचित

बरेली। दिनांक 02.7. 2026 को संस्थान में प्रशिक्षुओं के बहुभाषीय ज्ञान एवं सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तमिल भाषा पर एक विशेष परिचयात्मक सत्र का आयोजन किया गया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन एवं मार्गदर्शन संस्थान के कक्षा अध्यापक श्री श्रीकांत मिश्रा द्वारा किया गया। इस प्रकार के सत्रों का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षुओं को भारत की विविध भाषाओं एवं संस्कृतियों से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ना है।

तमिल भाषा से परिचित कराते हुए प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा।

सत्र का शुभारंभ एक दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति के साथ किया गया। कक्षा में प्रशिक्षुओं को तमिल भाषा के मूलभूत तत्वों से अवगत कराने के लिए एक विशेष वीडियो लेक्चर एवं प्रेजेंटेशन का प्रदर्शन किया गया। प्रस्तुति के दौरान प्रशिक्षुओं को दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली सरल एवं आवश्यक शब्दावली से परिचित कराया गया। प्रवक्ता द्वारा कक्षा में तमिल शब्दों का हिंदी में अर्थ स्पष्ट करते हुए उच्चारण का अभ्यास भी कराया गया। उदाहरणस्वरूप नमस्ते = वणक्कम, धन्यवाद = नंद्री तथा अन्य शब्दों का अभ्यास भी कराया गया। इस सत्र के माध्यम से प्रशिक्षुओं ने तमिल लिपि के स्वरूप, शब्दों के सही उच्चारण एवं तमिल संस्कृति की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षुओं ने भी अत्यंत उत्साह एवं रुचि के साथ इस सत्र में भाग लिया तथा नए शब्दों का अभ्यास किया। प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ यह सत्र प्रशिक्षुओं के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक रहा।

अपना डायट, बरेली

फरीदपुर, बरेली। जुलाई 2026

शारदा अभियान के तहत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली में डी.एल.एड प्रशिक्षुओं को दिया गया परिवार सर्वेक्षण प्रशिक्षण

बरेली। 20 जुलाई 2026 शैक्षिक सत्र 2026-27 में 6 से 14 आयु वर्ग के "आउट ऑफ स्कूल" बच्चों का शत-प्रतिशत चिन्हीकरण एवं आयु संगत कक्षा में नामांकन सुनिश्चित करने के लिए शासन द्वारा "कार्यक्रम शारदा - स्कूल हर दिन आए" वृहद अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत 16 जुलाई 2026 से 14 अगस्त 2026 तक जनपद के समस्त ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में परिवार सर्वेक्षण किया जाएगा । इसी क्रम में सोमवार को डायट परिसर के सभागार में डी.एल.एड प्रशिक्षुओं के लिए विशेष प्रशिक्षण आयोजित किया गया। सभी बैच के लिए अलग-अलग वक्ता एवं प्रवक्ता नियुक्त किए गए । 2025 बैच का प्रशिक्षण प्रवक्ता श्री राजेश द्वारा PPT के माध्यम से प्रेजेंटेशन प्रस्तुत कर प्रशिक्षुओं को सर्वेक्षण की पूरी प्रक्रिया समझाई गई। प्रशिक्षुओं को बताया गया कि सर्वेक्षण का कार्य डायट एवं प्राइवेट D.El.Ed/BTC कॉलेजों के प्रशिक्षुओं द्वारा किया जाएगा। सर्वेक्षण के दौरान गांव, बस्ती, मजरे, मोहल्ला के साथ-साथ ईंट भट्टों, खदानों, कारखानों, होटलों, ढाबों, असंगठित एवं मलिन बस्तियों, जनजातीय एवं घुमंतू समुदायों तथा मौसमी पलायन से प्रभावित परिवारों को भी शामिल किया जाएगा । प्रशिक्षुओं को निर्देशित किया गया कि प्रत्येक परिवार का विवरण परिवार सर्वेक्षण प्रपत्र में भरकर 2 प्रतियों में तैयार किया जाए। एक प्रति प्रधानाध्यापक अपने पास रखेंगे और दूसरी प्रति सत्यापित कर डायट कार्यालय में जमा की जाएगी। सर्वेक्षण में चिन्हित आउट ऑफ स्कूल बच्चों का नामांकन प्रधानाध्यापक द्वारा आयु संगत कक्षा में कराया जाएगा। समस्त डाटा SHARDA ऐप के माध्यम से 30-08-2026 तक अपलोड करना अनिवार्य होगा। प्रेजेंटेशन में यह भी बताया गया कि सर्वेक्षण प्रपत्रों की छायाप्रति हेतु ₹300 प्रति विद्यालय की धनराशि आवंटित की गई है। प्रशिक्षुओं को प्रत्येक परिवार के सर्वेक्षण पर ₹10 की दर से प्रोत्साहन राशि दी जाएगी, अधिकतम 30 परिवार प्रतिदिन। अभियान की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु खण्ड शिक्षा अधिकारी 15 विद्यालयों, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी 10 विद्यालयों तथा जिला समन्वयक 20 विद्यालयों में अनुश्रवण करेंगे। 2025 बैच के प्रशिक्षण कार्यक्रम में वरिष्ठ प्रवक्ता श्री मनोज कुमार एवं वरिष्ठ प्रवक्ता श्री सुनील कुमार सक्सेना, प्रवक्ता श्री दिनेश कुमार , डॉ० नीति माहौर एवं श्री राजेश सहित डायट के अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। प्रवक्ता श्री दिनेश कुमार ने कहा कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे, यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है। श्री राजेश ने डाटा की शुद्धता एवं समयबद्धता पर बल दिया। कक्षा अध्यापिका डॉ० नीति माहौर ने कहा कि घर-घर जाकर अभिभावकों को जागरूक करना आवश्यक है। वरिष्ठ प्रवक्ता श्री मनोज कुमार एवं श्री सुनील कुमार ने SHARDA ऐप पर डाटा फीडिंग की प्रक्रिया समझाई। संसथान की प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णे ने निर्देश दिए कि सर्वेक्षण कार्य पूरी निष्ठा से किया जाए ताकि जनपद शत-प्रतिशत नामांकन का लक्ष्य प्राप्त कर सके। अन्य डी.एल.एड कॉलेज का प्रशिक्षण वरिष्ठ प्रवक्ता मनोज कुमार, प्रवक्ता डॉ कृष्ण कुमार आदि की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ।

'स्कूल हर दिन आए' अभियान के अंतर्गत आउट ऑफ स्कूल बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के उद्देश्य से डायट परिसर में डी एड प्रशिक्षुओं को परिवार.एल.सर्वेक्षण का प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान प्रशिक्षुओं को निष्ठापूर्वक सर्वे करने, फॉर्म भरने और 30 अगस्त तक शारदा ऐप पर डेटा अपलोड करने के आवश्यक निर्देश दिए

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली में यूनिट टेस्ट एवं एक माह की क्रियात्मक प्रशिक्षण इंटर्नशिप पर हुआ विस्तृत मार्गदर्शन सत्र

बरेली। दिनांक 01 जुलाई 2026 को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली में प्रशिक्षुओं के शैक्षिक एवं व्यावहारिक विकास को ध्यान में रखते हुए एक विशेष मार्गदर्शन सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में संस्थान के वरिष्ठ प्रवक्ता श्री मनोज कुमार तथा कक्षा अध्यापक श्री श्रीकांत मिश्रा ने प्रशिक्षुओं का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का आरम्भ वरिष्ठ प्रवक्ता श्री मनोज कुमार के व्याख्यान से हुआ। उन्होंने अपने उद्बोधन में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना, उसके मुख्य उद्देश्यों, तथा प्राथमिक एवं बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में उसकी महती भूमिका पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की

प्रशिक्षुओं का मार्गदर्शन करते हुए वरिष्ठ प्रवक्ता मनोज कुमार।

बदलती भूमिका एवं उत्तरदायित्वों पर भी चर्चा करते हुए सभी प्रशिक्षुओं को समर्पण एवं निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने हेतु प्रेरित किया। अपने उद्बोधन में सर द्वारा प्रशिक्षुओं को tet/ctet प्रतियोगिता परीक्षा के बारे में बताया गया जिससे प्रशिक्षु आसानी से ऐसी परीक्षा पास कर सके। त्पश्चात कक्षा अध्यापक श्री श्रीकांत मिश्रा ने आगामी यूनिट टेस्ट को केंद्र में रखकर विस्तृत चर्चा की। जिससे प्रशिक्षुओं को परीक्षा की बेहतर तैयारी में सहायता प्राप्त हुई। इसी क्रम में उन्होंने क्रियात्मक प्रशिक्षण के महत्व को भी रेखांकित किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि पाठ्यक्रम के अंतर्गत सभी प्रशिक्षुओं को विद्यालयों में एक माह की अनिवार्य इंटर्नशिप करनी होती है। यह इंटर्नशिप कक्षा-कक्ष प्रबंधन, शिक्षण विधियों तथा छात्रों के साथ अंतःक्रिया का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान कर सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक धरातल पर उतारने का एक सशक्त माध्यम है।

शारदा अभियान की जानकारी देते हुए वक्ता एवं मौजूद डी.एल.एड प्रशिक्षु।

लेखन अभिव्यक्ति कौशल विकास हेतु विशेष गतिविधि आयोजित

बरेली। दिनांक 02.07.2026 को विद्यालय में प्रशिक्षुओं के लेखन एवं अभिव्यक्ति कौशल को निखारने के उद्देश्य से एक रचनात्मक गतिविधि का आयोजन किया गया। इस गतिविधि का संचालन प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा द्वारा किया गया। उन्होंने सभी छात्रों को उनकी पसंदीदा फिल्म पर एक लेख लिखने का निर्देश दिया। इसका उद्देश्य छात्रों की लेखन शैली, कल्पनाशीलता और विचारों को शब्दों में पिरोने की क्षमता को बढ़ाना था।लेखन कार्य पूर्ण होने के पश्चात, सभी प्रतिभागियों को मंच पर आमंत्रित कर अपने लेख को मौखिक रूप से एक्सप्लेन करने का अवसर प्रदान किया गया। इससे छात्रों का आत्मविश्वास और सार्वजनिक रूप से बोलने का कौशल भी विकसित हुआ।

अपने विचार साझा करते हुए डायट प्रशिक्षु।

इस अवसर पर प्रवक्ता श्री विनोद भी उपस्थित रहे और उन्होंने सभी बच्चों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की गतिविधियाँ छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। कार्यक्रम सभी के लिए प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक रहा

डायट फरीदपुर में तीन दिवसीय 'प्रज्ञा प्रवाह' प्रशिक्षण संपन्न, शिक्षकों को नैतिक मूल्यों व नवाचार आधारित शिक्षण की दी गई जानकारी

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर में शिक्षक शिक्षा योजना के अंतर्गत जनपद बरेली के माध्यमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए आयोजित तीन दिवसीय **'प्रज्ञा प्रवाह'** प्रशिक्षण कार्यक्रम का बुधवार को सफलतापूर्वक समापन हो गया। 13 जुलाई से 15 जुलाई 2026 तक संस्थान के सभागार में आयोजित इस प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए नवीन शिक्षण पद्धतियों से परिचित कराना रहा। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान की प्राचार्य एवं उप शिक्षा निदेशक श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय के निर्देशन में हुआ। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का माध्यम नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में संस्कार, संवेदनशीलता, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने का प्रभावी साधन भी है।

प्रमाण पत्र प्राप्त करते शिक्षक।

डायट प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान के साथ-साथ बच्चों में संस्कार, अनुशासन और संवेदनशीलता का विकास करना है। वरिष्ठ प्रवक्ता मनोज कुमार ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ जीवन मूल्यों के समावेश पर जोर दिया।

नोडल अधिकारी श्रीमती आकांक्षा के निर्देशन में गतिविधि-आधारित शिक्षण, प्रभावी कक्षा प्रबंधन, समावेशी शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा और आधुनिक तकनीकों पर सत्र आयोजित किए गए।

डॉ. कृष्ण कुमार, श्रीकांत मिश्रा, विनोद कुमार, एसआरजी डॉ. लक्ष्मी शुक्ला, डॉ. अनिल चौबे और धर्मवीर सहित मास्टर ट्रेनर्स ने समूह चर्चा, प्रस्तुतीकरण और व्यावहारिक गतिविधियों के जरिए शिक्षण कौशल साझा किए।

प्रधानाध्यापकों को मिला प्रभावी विद्यालय नेतृत्व का प्रशिक्षण, तीन दिवसीय 'सक्षम' कार्यक्रम सम्पन्न

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर में प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के क्षमता संवर्धन के उद्देश्य से आयोजित तीन दिवसीय 'सक्षम' प्रशिक्षण कार्यक्रम शुक्रवार को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। 22 से 24 जुलाई तक चले इस प्रशिक्षण में विद्यालयी नेतृत्व को सशक्त बनाने, शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार तथा विद्यालय प्रबंधन में नवाचार को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान विशेषज्ञ प्रशिक्षकों श्री कृष्ण कुमार, श्री सूर्यप्रताप सिंह, श्रीमती ममता, श्री महेंद्र पाल, श्रीमती अर्चना एवं श्रीमती वंदना सहाय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, विद्यालय नेतृत्व, अधिगम परिणामों में सुधार, विद्यालय विकास योजना, समावेशी शिक्षा, समुदाय की सहभागिता तथा प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया। गतिविधि- आधारित एवं सहभागितापूर्ण सत्रों में प्रधानाध्यापकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समापन समारोह को संबोधित करते हुए डायट प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय ने कहा कि विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में प्रधानाध्यापक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान, नवाचारों और अनुभवों को अपने अपने विद्यालयों में लागू कर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के उद्घाटन एवं समापन अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ प्रवक्ता श्री मनोज कुमार, श्री प्रेमसुख गंगवार तथा श्री सुनील कुमार सक्सेना भी उपस्थित रहे। उन्होंने

कार्यक्रम का शुभारम्भ करती प्राचार्य।

प्रशिक्षण की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। प्रशिक्षण में शामिल प्रधानाध्यापकों ने कार्यक्रम को अत्यंत उपयोगी, व्यवहारिक एवं प्रेरणादायक बताते हुए भविष्य में भी ऐसे क्षमता विकास प्रशिक्षणों के नियमित आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया।

गुरु वाणी

फरीदपुर, बरेली। जुलाई 2026

वृक्षों में छिपा है कुबेर का खजाना

डॉ. नीति माहौर
प्रवक्ता शिक्षाशास्त्र
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
फरीदपुर, बरेली

क्या आप जानते हैं कि एक वृक्ष लाखों का मालिक होता है, अर्थात लखपति होता है। विशेषज्ञों के अनुसार एक वृक्ष अपने पूरे जीवन में हमें फल, फूल, सब्जियाँ, दवाइयाँ, भूमि कटाव रोकने, ईंधन, फर्नीचर आदि के माध्यम से लाखों रुपये का लाभ देता है। एक वृक्ष कम से कम 5 लाख रुपये मूल्य की ऑक्सीजन देता है तथा 8 लाख रुपये मूल्य के प्रदूषण को रोकने में योगदान देता है। एक हेक्टेयर वन क्षेत्र हर साल लगभग 4 टन कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण करता है और बदले में वायुमंडल को 17 टन प्राणवायु अर्थात ऑक्सीजन देता है। (यह मात्रा वन के प्रकार, आयु और जलवायु के अनुसार बदल सकती है।)।

वन (पेड़-पौधे) कई अन्य उपयोगी कार्य भी करते हैं, जैसे वर्षा के जल को भूमिगत करना, भू-क्षरण को रोकना तथा बाढ़, सूखा, आँधी और तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करना। 5×10 मीटर माप का एक लॉन भी इतनी ऑक्सीजन छोड़ता है, जो चार व्यक्तियों के लिए पर्याप्त होती है। बदले में वह केवल हमारे द्वारा छोड़ी गई कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) ही ग्रहण करता है। हम मनुष्यों का कर्तव्य है कि जीवनरक्षक एवं अनमोल वृक्षों को फलने-फूलने दें। पेड़-पौधों की सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करें, ताकि हरियाली बची रहे और बनी रहे। आज हम निरंतर पेड़-पौधों को उजाड़ने में लगे हैं, जो कि प्रकृति के लिए हानिकारक है। मनुष्य प्रकृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रकृति के साथ सामंजस्य ही मनुष्य के जीवन को बचा सकता है। स्टॉकहोम पर्यावरण सम्मेलन, 1972 में स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने अपने भाषण में कहा था— "जो लोग प्रकृति के प्रतिकूल होते हैं, वे मानवद्रोही और अविवेकी होते हैं।"

अतः विवेकी एवं प्रकृति-प्रेमी बनें और मानव होने के नाते प्रकृति की रक्षा करके स्वयं को तथा आने वाली पीढ़ी को बचाएँ।

हिन्दी: ज्ञान, सम्मान और पहचान

पूनम
ARP क्यारा।

हिंदी मेरी प्यारी भाषा,
सबको देती नई परिभाषा।
मीठे शब्दों की है यह खान,
बढ़ाती भारत की पहचान।
हिंदी से हम ज्ञान हैं पाते,
अपने मन की बात बताते।
प्रेम, स्नेह और सम्मान सिखाए,
सबको अपने पास बुलाए।
किताबों की यह सुंदर शान,
बनती है संस्कृति की पहचान।
हिंदी का हम मान बढ़ाएँ,
मिलकर इसका गौरव गाएँ।
सरल, सुगम और सबसे न्यारी,
हिंदी भाषा सबको प्यारी।
आओ मिलकर प्रण यह लें,
हिंदी का सम्मान करें।

बालगीत: नीम की चिट्ठी

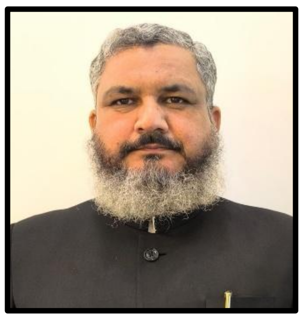

फरहान अहमद सैफी
प्रवक्ता भौतिक विज्ञान
एफ आर इस्लामिया इंटर कॉलेज बरेली।

नीम ने लिख भेजी चिट्ठी,
हवा बनी डाकिया।
आओ बच्चे खेलो आकर,
मत बैठो लेकर तकिया।
गर्मी की छुट्टी हो गई
नानी के घर आना है।
दीदी और भैया संग,
दूध मलाई खाना है।
गौरैया ने खबर सुनाई ,
कौआ ढोल बजाए।
आम, जामुन और इमली सब,
मिलकर गीत सुनाए।
हमने हँसकर उत्तर भेजा,
आते हैं कल भोर।
नीम तले फिर मेला होगा,
नाचेंगे जी भर और।

सफलता की कहानी : जब कक्षा बन गई सीखने का उत्सव।

आज सपोर्टिव सुपरविजन हेतु पीएम श्री कंपोजिट विद्यालय खजुरिया संपत ब्लॉक भुता, जनपद बरेली जाने का अवसर मिला। वहां अवलोकित कक्षा 1 का दृश्य देखकर मन प्रसन्न हो गया। कक्षा की दीवारों पर बने रंग-बिरंगे चित्र, फल, फूल, पक्षी, पशु और वर्णमाला बच्चों के लिए सीखने का सुंदर वातावरण बना रहे थे। शिक्षिका सुश्री अंजू राना जी पूरे उत्साह और सृजनशीलता के साथ बच्चों को पढ़ा रहीं थीं। हर बच्चा आनंद से झूमते हुए सीख रहा था, हाथ उठाकर उत्तर देने को उत्साहित था। बच्चों के चेहरों पर खुशी और आत्मविश्वास साफ दिखाई दे रहा था। सबसे विशेष बात यह रही कि बच्चों के कार्यों को संजोने के लिए पोर्टफोलियो तैयार किया गया था, जो उनकी सीखने की शानदार यात्रा का प्रमाण था। बच्चों की कॉपियां अनेक रंगों के चित्रों से सजी थी। बच्चों ने लिखा ही नहीं था वरन लग रहा था रंगों से खेला है। यह शानदार शिक्षिका सुश्री अंजू राना जी,उनकी यह कक्षा बताती है कि जब शिक्षक समर्पण और प्रेम से पढ़ाते हैं, तो कक्षा सिर्फ कमरा नहीं रहती, सीखने का उत्सव बन जाती है। ऐसे शिक्षक हम सभी के लिए प्रेरणा हैं।

Dr. Laxmi Shukla SRG Bareilly (Department of Basic Education Uttar Pradesh)

डीएलएड प्रशिक्षु द्वारा लिखी गई कविताएँ।

शिक्षक - ज्ञान का प्रकाश

गुरु हैं ज्ञान के दीप महान,
उनसे मिलता सच्चा सम्मान।
अज्ञान का अंधियारा मिटाकर,
जीवन को देते नई पहचान।

माँ देती है जीवन हमको,
पिता देते हैं प्यार।
पर गुरु ही हमें सिखाते,
जीने का सही व्यवहार।

जब-जब हम गिर जाते हैं,
गुरु हमें संभाल लेते हैं।
हाथ पकड़कर मंज़िल तक,
चलना हमें सिखा देते हैं।

कभी डाँट में छिपा होता प्यार,
कभी शब्दों में होता उपकार।
उनकी हर सीख अमूल्य होती,
बदल देती जीवन का संसार।

आओ मिलकर प्रण यह करें,
गुरुओं का सम्मान सदा करें।
उनके दिखाए सच्चे पथ पर,
ईमानदारी से आगे बढ़ें।

अंत में बस इतना कहना है—
गुरु का ऋण कभी चुकाया नहीं जाता,
उनका सम्मान कभी भुलाया नहीं जाता
जो झुकता है अपने गुरु के चरणों में,
उसी के होते सपने साकार।

वैष्णवी भारद्वाज
डी.एल.एड. 2025

लड़कियाँ कभी अच्छी बेटी नहीं हो सकती

कि लड़कियाँ कभी अच्छी बेटी नहीं हो सकती ।
या तो अच्छी हो सकती है,
और या तो बेटियां ।
क्योंकि अगर अच्छी हो भी गई,
तो समाज के लिए बिगडेल हो जाएंगी ।
क्यूंकी,
स्त्री के हिसे तो कभी स्वयं शब्द आता ही नहीं,
उसके हिस्से तो आती है त्याग की वर्णमाला ।
घर त्याग देंगी तो अच्छी बहू,
नौंकरी त्याग देंगी तो अच्छी मां,
सुख त्याग देंगी तो अच्छी इंसान ।
स्त्री कुछ ना करे तो बोझ लगती है,
कुछ करे तो बोझ ढोती है ।
और अगर ये सब कुछ कर भी ले,
तो ज्यादा से ज्यादा घर का बेटा कहलाएगी,
इसीलिए,
लड़कियां कभी अच्छी बेटी नहीं हो सकती है ।

आयुषी
डी.एल.एड. 2025

आत्मविश्वास

दिन में सूरज है अगर, तो रात को भी चाँद तारे हैं,
पर जीत तो वे लोग भी सकते हैं, जो कभी हारे हैं।

कभी धूप कभी बारिश, ये तो कुदरत के नजारे है,
पर प्यासे तो वे लोग भी हैं, जो समुद्र के किनारे हैं।

कुछ न कर सके तो कहते हैं, हम तो किस्मत के मारे हैं,
पर जान न सके तुम खुद को, कि कितने रूप तुम्हारे हैं?

हिम्मत और हौसला हो अगर, तो रास्ते कई सारें हैं,
पर जीत तो वे लोग भी सकते हैं, जो कभी हारे हैं।

आरिफ़ा क़दीर
डी.एल.एड. 2025

ना चादर बड़ी करो, ना ख्वाहिशें दफ़न करो,

ना चादर बड़ी करो, ना ख्वाहिशें दफ़न करो,
चार दिन की ज़िंदगी है, मुस्कुराकर बशर करो ।

ना बुरा किसी का करो, ना हैरान किसी को करो,
कोई लाख गलत भी बोले, बस मुस्कुराकार छोड़ दो।

ना रूठा किसी से करो, ना झूठा वादा किसी से करो,
कुछ फुरसत के पल निकालो, कभी खुद से भी मिला करो।

अलमास क़दीर
डी.एल.एड. 2025

माँ – मेरी पहली दुनिया

मंच पर खड़ा हूँ आज, एक अरमान लेकर,
माँ की ममता का छोटा-सा सम्मान लेकर।

वह कोई ताज नहीं पहनती, फिर भी सबसे महान है,
उसकी दुआओँ से ही मेरा हर सपना आसान है।

जब चलना भी नहीं आता था, उसने उँगली थाम ली,
मेरी हर छोटी-सी धड़कन को अपनी धड़कन मान ली।

मेरी हँसी में उसकी खुशियाँ, मेरे दर्द में उसकी पीर,
मेरे लिए हर आँधी से लड़ती रही वह निडर वीर।

खुद की नींदें बेचकर उसने मेरे सपने सँवारे,
अपने आँचल में छिपाकर जीवन के काँटे भी हारे।

उसने सिखाया—सच की राह कभी मत छोड़ना,
गिर जाओ तो फिर उठना, मगर हिम्मत मत तोड़ना।

माँ केवल एक रिश्ता नहीं, जीवन का विश्वास है,
उसके होने से ही हर अँधेरा भी उजास है।

यदि ईश्वर का रूप कहीं इस धरती पर मिलता है,
तो वह माँ की मुस्कान में हर पल खिलता है।

आओ, आज सभी यह प्रण दोहराएँ,
जीवन भर माँ का मान बढ़ाएँ।

क्योंकि माँ का ऋण शब्दों से कभी चुकाया नहीं जाता,
उसके चरणों का सम्मान ही सबसे बड़ा नाता।

मोहम्मद शाहरुख (डी.एल.एड. 2025)

शिक्षा का दीप

आओ मिलकर दीप जलाएं,
शिक्षा का संदेश फैलाएं ।
ज्ञान की ज्योति घर - घर पहुँचे,
हर जीवन में उजियारा लाएं।

शिक्षा देती नई दिशा है,
जीवन की यह सच्ची आशा है ।
मेहनत, साहस, सत्य का पथ,
यही सफलता की परिभाषा हैं।

गुरु का सम्मान सदा करे,
ज्ञान का आदर मन में धरे ।
शिक्षित होकर बढ़े निरंतर,
देश का गौरव मिलकर करे।

आओ ऐसा प्रण दोहराएं,
अज्ञान का तम दूर भगाएं ।
हर मन में शिक्षा का दीप जले,
भारत को ज्ञानवान बनाएं।

मधु पटेल
डी.एल.एड. 2025

बारिश का नजरिया

बारिश की बूंदे जब धरती पर आती है,
अपने साथ खुशियो की सौगात लाती है।
ठंडी हवाए, मिट्टी की खुशबू,
हर चेहरे पर मुस्कान ले आती है।

कुछ लोग बारिश से बचकर छुप जाते है,
कुछ लोग बूंदो में खुशियां पाते है।
कोई बारिश के इस मौसम में गीत गुनगुनाता है,
तो कोई पुरानी यादो में खो जाता है।

बारिश तो सबके लिए एक जैसी होती है,
फिर भी हर किसी की कहानी अलग होती है।
फर्क बारिश में नहीं ,सोच के नजरिए में होता है,
कोई मुश्किल में भी मुस्कुराता है,
और कोई डर से छुप जाता है।

जिंदगी भी बारिश की तरह एक सफर है,
कभी धूप है तो कभी बादलो का असर है।
जो हर हाल में उम्मीद का दीप जलाता है,
वही इंसान हर मौसम में खुश रहना सीख जाता है!

मुस्कान
डी.एल.एड. 2025

कलाकृतियां

डीएलएड प्रशिक्षु द्वारा बनाई गई कलाकृतियां

सौजन्य से कविता सिंह, डीएलएड 2025

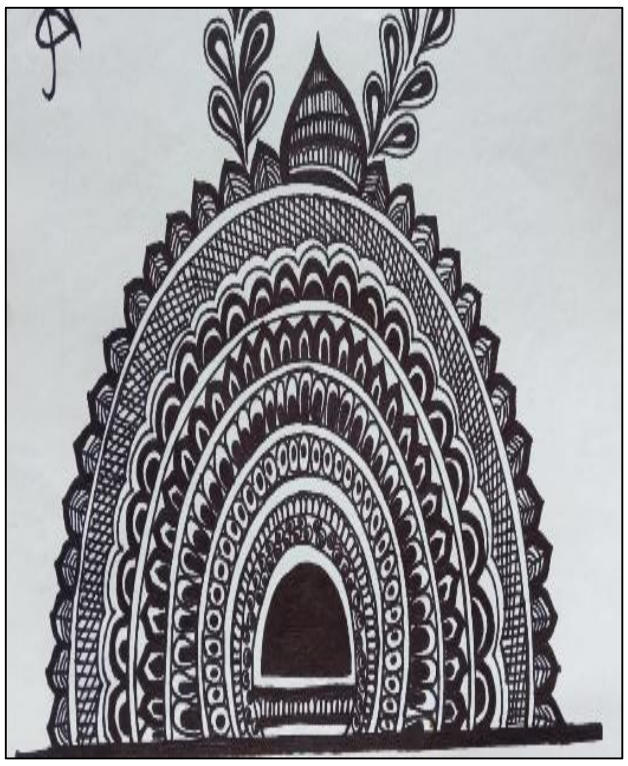

सौजन्य से नीतू सैनी, डीएलएड 2025

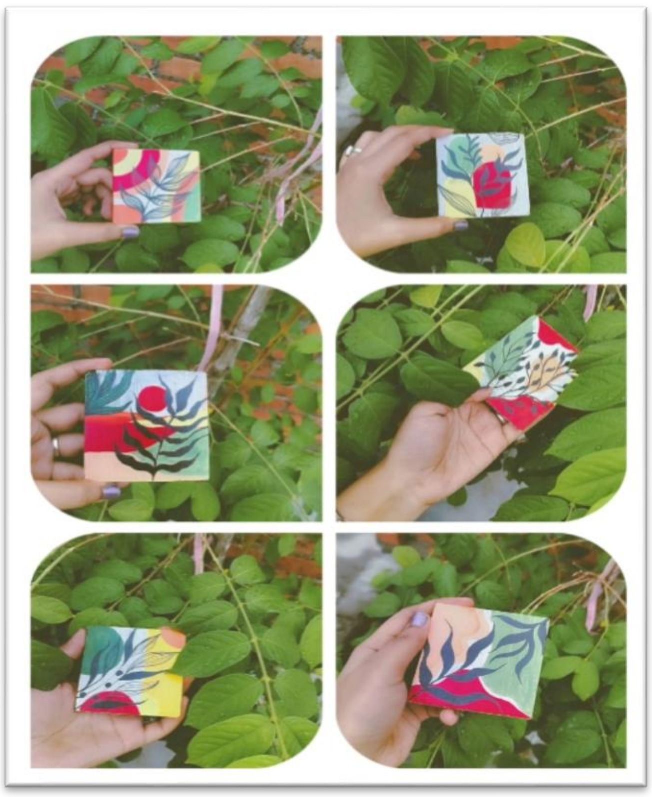

सौजन्य से सुहानी वर्मा, डीएलएड 2025

विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए डी.एल.एड प्रशिक्षुओं ने प्रस्तुत किए नवीन टीएलएम विचार

भावी शिक्षकों को गतिविधि-आधारित और व्यावहारिक शिक्षण तकनीकों में निपुण बनाने के उद्देश्य से इस माह जीव विज्ञान कक्षा में एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह गतिविधि संस्थान की **प्रवक्ता श्रीमती सावित्री (जीव विज्ञान)** के कुशल मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

कार्यशाला का मुख्य विषय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों को **'सजीव और निर्जीव' (Living vs Non-Living)** के बीच मूलभूत अंतर को रटाने के बजाय व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से समझाना था। इस दौरान प्रशिक्षुओं ने नवीन और बेहतरीन टीएलएम आइडियाज प्रस्तुत किए।

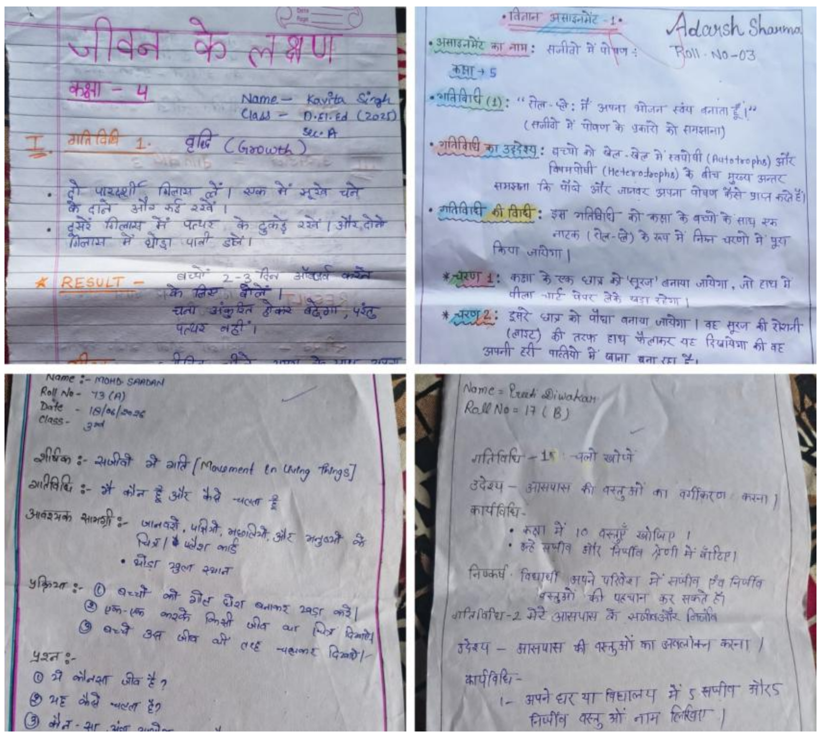

प्रशिक्षुओं के कुछ बेहतरीन टीएलएम आइडियाज:

- **बीज और कंकड़ का प्रयोग:** एक गमले में बीज और दूसरे में पत्थर बोकर बच्चों से रोज़ पानी डलवाना, ताकि वे सजीव (अंकुरण) और निर्जीव (कोई बदलाव नहीं) का स्वयं अवलोकन कर सकें।
- **श्वसन और गति का व्यावहारिक अनुभव:** छात्रों को अपनी छाती पर हाथ रखकर साँस लेने और कक्षा की निर्जीव वस्तुओं (जैसे कुर्सी-मेज) का अवलोकन कराने वाली गतिविधियों के विचार भी साझा किए गए।

यह गतिविधि विज्ञान को आसान बनाकर, उसे बच्चों के वास्तविक जीवन से जोड़ने का एक बेहतरीन प्रयास था।

निरंतर प्रयास से सफलता

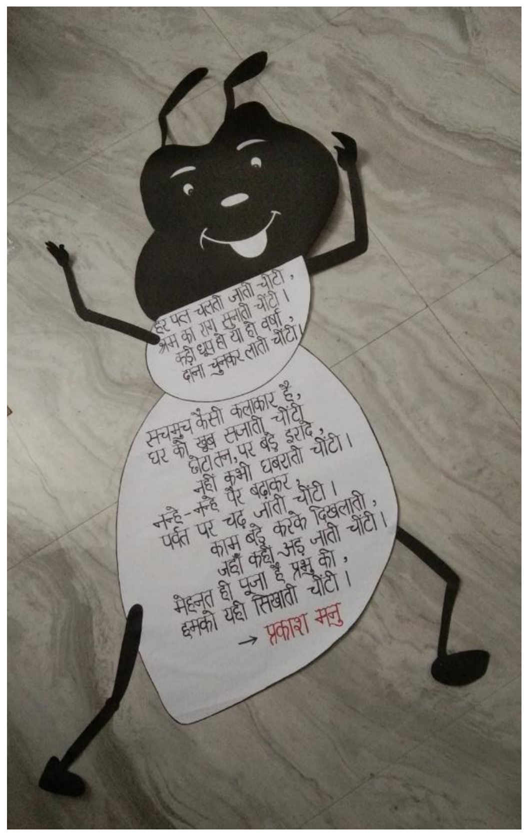

टीएलएम के माध्यम से 'कविता शिक्षण' की एक रचनात्मक गतिविधि

"चींटी" कविता में चींटी के छोटे से शरीर और उसके बड़े गुणों का वर्णन किया गया है। कविता बताती है कि चींटी बहुत मेहनती, अनुशासित और साहसी होती है। वह अपने से कई गुना भारी दाना उठाकर ले जाती है और कभी हार नहीं मानती। छोटी होने के बावजूद वह कठिन रास्तों पर भी आगे बढ़ती रहती है। कविता बच्चों को परिश्रम, धैर्य और लगन का महत्व सिखाती है। चींटी हमें यह संदेश देती है कि निरंतर मेहनत करने से बड़े से बड़ा काम भी पूरा किया जा सकता है।

विभा गंगवार डी.एल.एड 2024-26

पानी की एक-एक बूंद है अनमोल, जानिए कहाँ से मिलता है हमें जीवनदायी जल

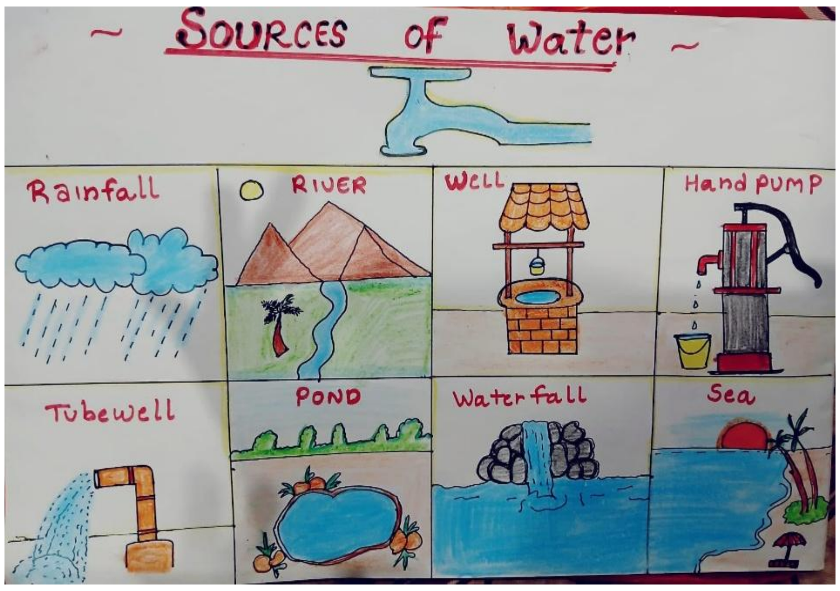

जीवन के अस्तित्व के लिए जल अत्यंत आवश्यक है। हाल ही में जल संरक्षण विशेषज्ञों ने 'जल के प्रमुख स्रोतों' पर प्रकाश डालते हुए लोगों से जल बचाने की अपील की है।

जल के मुख्य स्रोत:

- **वर्षा:** यह पृथ्वी पर जल का सबसे मुख्य और बड़ा स्रोत है।
- **भूमिगत जल:** बारिश का पानी जमीन में रिसकर जमा होता है।
- **प्राकृतिक स्रोत:** नदियाँ, तालाब और जलप्रपात (झरने) प्रकृति द्वारा दिए गए प्रमुख जल स्रोत हैं।
- **समुद्र:** इसका पानी अत्यधिक खारा होने के कारण सीधे पीने योग्य नहीं होता।

रितिका डी.एल.एड 2024-26

डी.एल.एड प्रशिक्षु फहमीना द्वारा तैयार किया गया आकर्षक 'वाइल्ड एनिमल्स' टी.एल.एम. प्रोजेक्ट

डी.एल.एड. के प्रशिक्षण सत्र के दौरान एक बेहद रचनात्मक और आकर्षक शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) प्रस्तुत की गई है, जिसे विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को जंगली जानवरों की पहचान कराने के लिए तैयार किया गया है। यह मॉडल देखने में एक त्रि-आयामी (3D) डिस्प्ले की तरह प्रतीत होता है, जिसमें पर्यावरण अध्ययन (EVS) को रुचिकर बनाने का अनूठा प्रयास

WILD ANIMALS TLM

किया गया है। इस प्रोजेक्ट के मुख्य आधार पर सबसे आगे बड़े और रंगीन अक्षरों में "WILD ANIMALS" का एक सुंदर बोर्ड लगाया गया है, जो इस मॉडल का मुख्य आकर्षण केंद्र है। इस बोर्ड के पीछे विभिन्न जंगली जानवरों के रंग-बिरंगे और स्पष्ट चित्र डंडियों (स्टिक्स) के सहारे ऊंचाई पर खड़े किए गए हैं, जिससे बच्चों को प्रत्येक जानवर को अलग से देखने और समझने में आसानी होती है। इस टी.एल.एम. में शेर (Lion), बाघ (Tiger), हाथी (Elephant), जिराफ (Giraffe), ज़ेबरा (Zebra), भालू (Bear), गैंडा (Rhinoceros), चीता (Leopard), कंगारू (Kangaroo), लोमड़ी (Fox), मगरमच्छ (Crocodile), पांडा (Panda) और हिरण (Deer) जैसे प्रमुख वन्यजीवों को शामिल किया गया है। प्रत्येक चित्र के नीचे संबंधित जानवर का अंग्रेजी नाम भी स्पष्ट रूप से अंकित है, जिससे बच्चों का शब्द ज्ञान और अंग्रेजी शब्दावली भी मजबूत होती है।

करंट अफेयर का अर्थ है ~ देश और दुनिया में होने वाली नई और महत्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी । यदि हम रोज करंट अफेयर पढ़ते हैं । तो हमें नहीं योजनाओं,तकनीक, शिक्षा,रोजगार और सरकारी नीतियों की जानकारी मिलती रहती है ।

÷ करंट अफेयर के लाभ ÷

- ज्ञान और समझ बढ़ती है ।
- प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छे अंक मिलते हैं ।
- इंटरव्यू में आत्मविश्वास बढ़ता है ।
- सही करियर चुनने में मदद मिलती है ।
- देश और दुनिया की नई जानकारी मिलती रहती है।

अगले अंक हेतु आमंत्रण

प्रिय पाठकगण,

DIET मासिक बुलेटिन के आगामी अंक के लिए आपकी रचनाओं एवं योगदानों का स्वागत है। आप अपने लेख, कविता, लघु कहानी, अनुभव, पुस्तक समीक्षा, शैक्षिक विचार, नवाचार, चित्रकला, फोटोग्राफ तथा संस्थान की गतिविधियों से संबंधित सामग्री हमारी **g-mail ricdietbareilly@gmail** पर भेज सकते हैं। अपनी प्रविष्टियां प्रतिमाह की दिनांक 20 तक उपलब्ध करा सकते हैं जिस में से चयनित प्रविष्टियों को आगामी अंक में सम्मिलित किया जाएगा । आइए, अपने विचारों, रचनात्मकता और नवाचारों को साझा करें तथा इस बुलेटिन को ज्ञान, शिक्षा, नवाचार और प्रेरणा का सशक्त मंच बनाएं।

संपादकीय मंडल
DIET मासिक बुलेटिन

करंट अफेयर्स 2026

आस्था वन योजना :- केंद्र सरकार ने देश भर मे लगभग 15000 पवित्र उपवनो के संरक्षण के लिए ₹3000 करोड़ की योजना को मंजूरी दी है।

मानव-हाथी संघर्ष केंद्र:- भारत का पहला ह्यूमन एलीफेंट का फिलक्ट सेंटर झारखंड मे स्थापित किया जा रहा है ।

स्टेट ऑफ इंडिजाज एनवायरनमेंट 2026 :- सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट की रिपोर्ट के अनुसार 99% दिनो मे चरम मौसम देखा गया और सात प्रमुख सीमाओ का उल्लंघन हुआ है ।

कार्बन-सोखने वाला ट्री :- पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन की दिशा मे एक कदम बढाते हुए मध्य प्रदेश के भोपाल मे देश का पहला कार्बन-सोखने वाला एल्गी ट्री लाॅंच किया गया ।

तेंदआ नियंत्रण कार्यक्रम:- पर्यावरण मंत्रालय ने देश मे पहली बार महाराष्ट्र मे तेंदुआ जन्म नियंत्रण कार्यक्रम को मंजूरी दी है।

शेखा झील पक्षी अभयारण्य:- अप्रैल 2026 मे उत्तर प्रदेश के अलीगढ मे स्थित शेखा झील पक्षी अभयारण्य को भारत का 99वां रामसर आद्रभूमि घोषित किया गया

विश्व पर्यावरण दिवस 2026:- प्रतिवर्ष 5जून को मनाए जाने वाले इस दिवस की 2026 की थीम इंस्पायर्ड बाय नेचर फॉर क्लाइमेट फॉर आवर फ्यूचर थी ।

FIFA World Cup 2026

2026 का वर्ल्ड कप **USA, कनाडा और मेक्सिको** में हुआ था - पहली बार **3 देशों** में और 48 टीमों के साथ।

फाइनल रिजल्ट*

- **विजेता**:- स्पेन 🏆

स्पेन ने अर्जेंटीना को 1-0 से एक्स्ट्रा टाइम में हराकर दूसरी बार वर्ल्ड कप जीता।
गोल:- फेरान टोरेस ने 107वें मिनट में किया

- **उप-विजेता:-** अर्जेंटीना

मेसी की टीम टाइटल बचा नहीं पाई। फाइनल के बाद हंगामा हुआ और लेआंद्रो परेडेस को रेड कार्ड मिला

- **तीसरा स्थान:-** इंग्लैंड

इंग्लैंड ने फ्रांस को 6-4 से हराया
फाइनल 19 जुलाई 2026 को मेटलाइफ स्टेडियम, न्यूयॉर्क न्यू जर्सी में हुआ

टूर्नामेंट के बड़े हाइलाइट्स

- **स्पेन** वर्ल्ड चैंपियन बनी 2010 के बाद पहली बार
- **किलियन एम्बापे** गोल्डन बूट विनर 10 गोल के साथ। वो पहले खिलाड़ी बने जिन्होंने 2 बार गोल्डन बूट जीता
- **लियोनेल मेसी** 8 गोल के साथ दूसरे नंबर पर रहे। अर्जेंटीना के लिए 10वां वर्ल्ड कप असिस्ट भी किया
- **क्रिस्टियानो रोनाल्डो** 6 अलग-अलग वर्ल्ड कप में गोल करने वाले पहले खिलाड़ी बने
- **एर्लिंग हालैंड** ने नॉर्वे के लिए 2 गोल किए, नॉर्वे ने इराक को 4-1 से हराया
- **ब्राजील** राउंड ऑफ 32 में बाहर हो गई

मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 12-35)

अनुच्छेद 12: 'राज्य' (State) की परिभाषा।

अनुच्छेद 13: मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करने वाली या असंगत विधियों (Laws) को शून्य घोषित करना।

1. समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14-18):

अनुच्छेद 14: विधि के समक्ष समता और विधियों का समान संरक्षण।

अनुच्छेद 15: धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध।

अनुच्छेद 16: लोक नियोजन (सरकारी नौकरियों) के विषय में अवसर की समानता।

अनुच्छेद 17: अस्पृश्यता (छुआछूत) का अंत।

अनुच्छेद 18: उपाधियों का अंत।

2. स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19-22):

अनुच्छेद 19: वाक् स्वतंत्रता (बोलने), अभिव्यक्ति, सभा, संगठन, संचरण, निवास और व्यापार की स्वतंत्रता।

अनुच्छेद 20: अपराधों के लिए दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण।

अनुच्छेद 21: प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण (व्यक्तिगत स्वतंत्रता)।

अनुच्छेद 21A: शिक्षा का अधिकार (6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा)।

अनुच्छेद 22: कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।.

3.शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23-24):

अनुच्छेद 23: मानव के दुर्व्यापार और बलात् श्रम का प्रतिषेध।

अनुच्छेद 24: कारखानों आदि में बालकों के नियोजन पर प्रतिबंध (14 वर्ष से कम आयु)।

4. धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 25-28):

अनुच्छेद 25: अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता।

अनुच्छेद 26: धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता।

अनुच्छेद 27: किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के बारे में स्वतंत्रता।

अनुच्छेद 28: कुछ शिक्षण संस्थानों में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के बारे में स्वतंत्रता।

5. संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार (अनुच्छेद 29-30):

अनुच्छेद 29: अल्पसंख्यक वर्गों के हितों का संरक्षण।

अनुच्छेद 30: शिक्षा संस्थानों की स्थापना और प्रशासन करने का अल्पसंख्यक वर्गों का अधिकार।

6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद 32-35):

अनुच्छेद 32: मौलिक अधिकारों को प्रवर्तित कराने के लिए उपचार (इसे संविधान की 'आत्मा' कहा जाता है)।

अनुच्छेद 33: इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों का बलों आदि पर लागू होने में उपांतरण करने की संसद की शक्ति।

अनुच्छेद 34: किसी क्षेत्र में मार्शल लॉ (सैन्य शासन) लागू होने के दौरान इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों पर निर्बंधन।

अनुच्छेद 35: इस भाग के उपबंधों को प्रभावी करने के लिए विधान (कानून) बनाने की संसद की शक्ति।

-सुप्रीत शर्मा (डी एल एड 2025)

"टाइम मैनेजमेंट "

कॉलेज की पढ़ाई और कंपटीशन एग्जाम की तैयारी को एक बैलेंस करने के तरीके

1). 80/20 - सिलेबस का परीक्षण करें। हर परीक्षा में 20% टॉपिक ऐसे होते हैं जिनसे 80% सवाल पूछे जाते हैं। ऐसे टॉपिक्स की लिस्ट बनाएं और उन्हें पूरा करें।

2). रोजाना 'करंट अफेयर्स'- 30 मिनट

अखबार यह किसी भरोसेमंद अप से रोजाना 30 मिनट देश- दुनिया की खबरों को दें। क्योंकि इन सबको दिन पहले रटना मुश्किल है जिससे तनाव भी हो सकता है।

3). मॉक टेस्ट - हफ्ते में कम से कम एक मॉक टेस्ट अवश्य दें। इससे यह पता चलेगा कि कितने सवाल गलत हुए और क्यों हुए। फिर उन प्रश्नों पर ध्यान दें।

सवाल --

यदि किसी कोड लैंग्वेज में KITE को 9-7-18-3 लिखा जाता है तो BIRD को कैसे लिखेंगे?

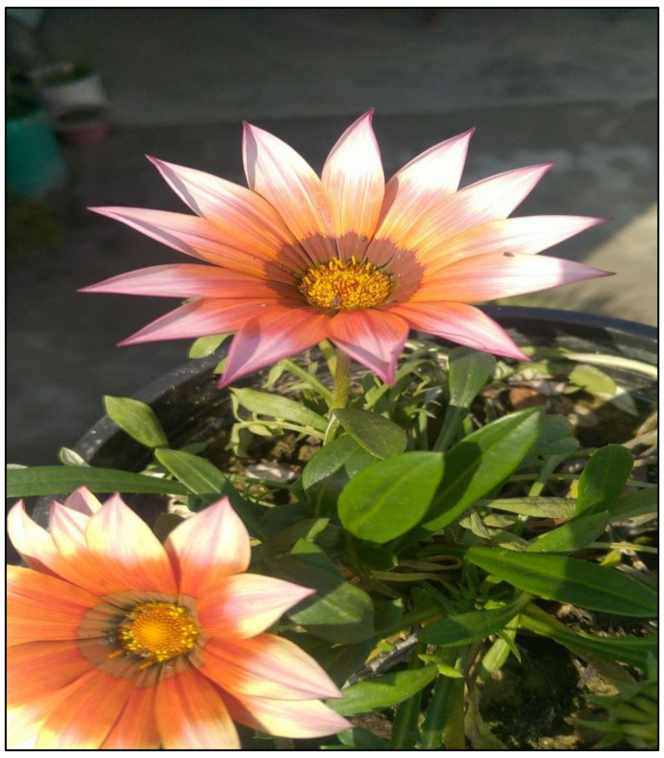

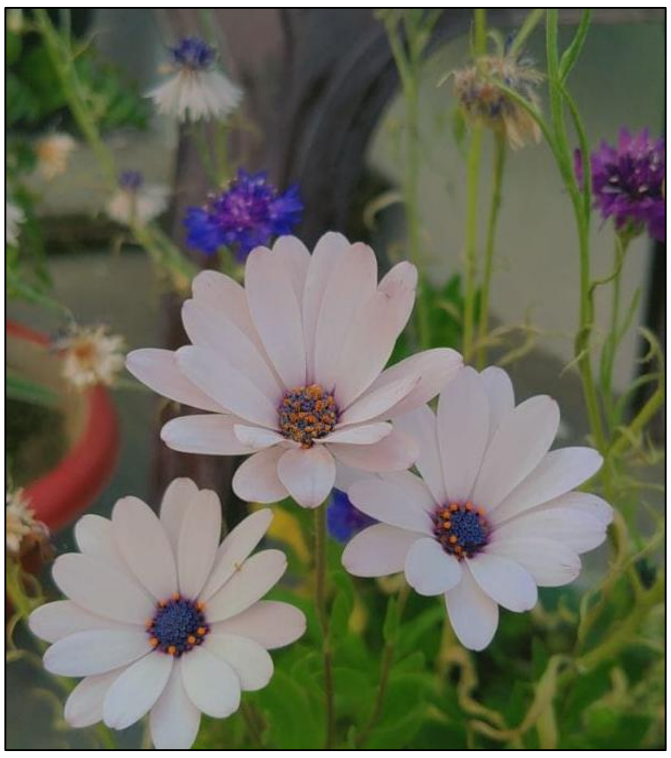

सौजन्य से अल्मास कदीर, डीएलएड 2025

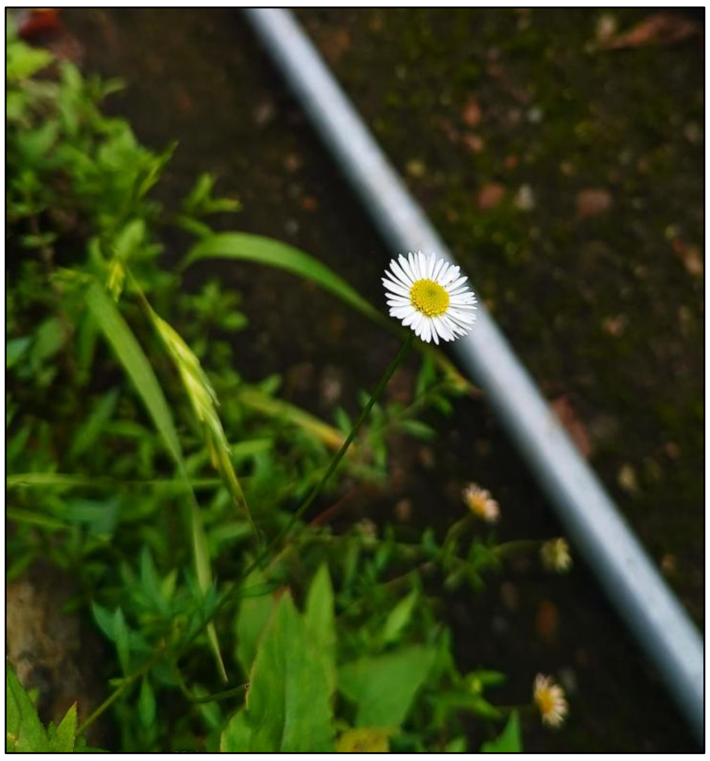

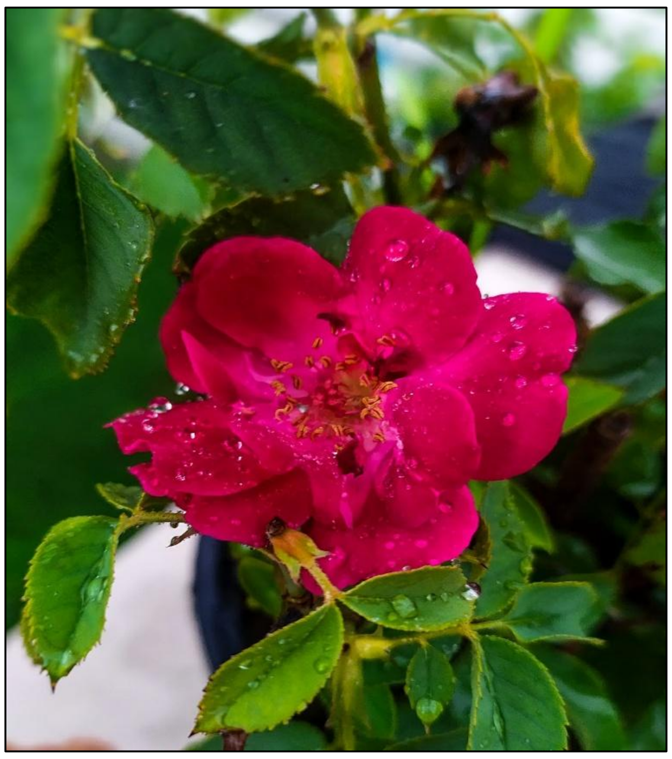

सौजन्य से कविता सिंह, डीएलएड 2025

सौजन्य से कृतिका तिवारी, डीएलएड 2025

सौजन्य से शिवांग शर्मा, डीएलएड 2025

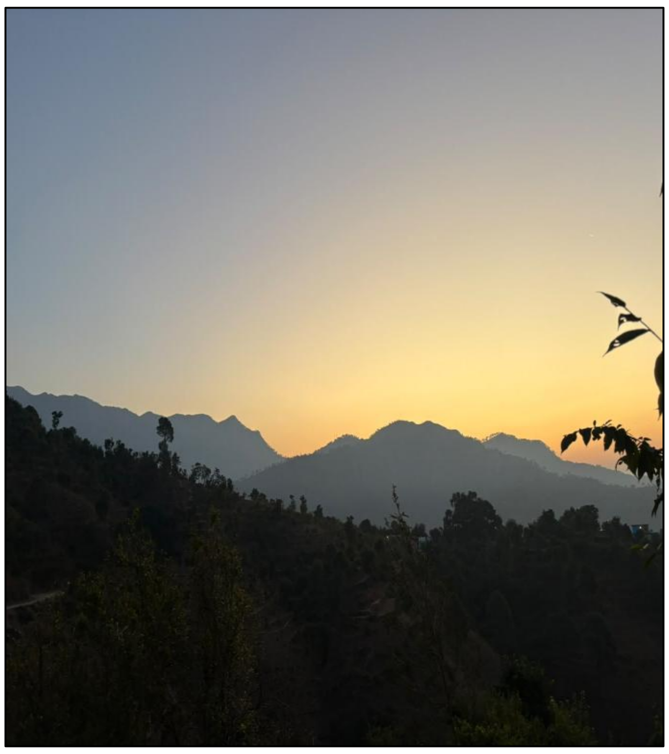

सौजन्य से मीनू बोरा, डीएलएड 2025

प्रेरणा, अभ्यास और अनुशासन: खेल की दुनिया में शिखर छूने का त्रिकोण।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली में "इनडोर खेल के साथ सीख" - प्रशिक्षुओं के चेहरे पर खिली

बरेली। संस्थान में प्रशिक्षुओं के लिए एक यादगार दिन देखने को मिला। लगातार पढ़ाई, कार्यशालाओं और प्रैक्टिकल के बीच तनाव को दूर करने के उद्देश्य से संस्थान में कैरम, लूडो और शतरंज जैसे इनडोर खेलों का विशेष आयोजन किया गया। इस पूरे कार्यक्रम का आयोजन कक्षाध्यापक श्री श्रीकांत मिश्रा के मार्गदर्शन में किया गया। कक्षाध्यापक ने न सिर्फ इस आयोजन की योजना बनाई, बल्कि स्वयं प्रशिक्षुओं के साथ बैठकर उनका उत्साह भी बढ़ाया। हॉल में चारों तरफ खेलों की आवाजें गूंज रही थीं। एक तरफ शतरंज की बिसात पर गहन सोच-विचार चल रहा था, तो दूसरी तरफ लूडो के पासे फेंकने पर ठहाके लग रहे थे। कैरम बोर्ड पर सटीक निशाने लगाकर प्रशिक्षु एक-दूसरे को बधाई दे रहे थे।

श्री श्रीकांत मिश्रा शतरंज खेलते समय प्रशिक्षुओं को नई-नई चालें भी सिखाते नजर आए। उन्होंने बताया कि शतरंज सिर्फ एक खेल नहीं है, यह हमें जीवन में धैर्य, योजना बनाना और सही समय पर सही निर्णय लेना सिखाता है। वहीं लूडो और कैरम खेलते समय टीम भावना, हार-जीत को स्वीकार करना और आपसी सहयोग का महत्व भी समझाया गया।

प्रशिक्षुओं के लिए यह समय बहुत खास रहा। किताबों और नोट्स से हटकर सभी ने खुलकर हंसी-मजाक किया और एक-दूसरे को नए सिरे से जाना। कई प्रशिक्षुओं ने कहा कि ऐसे आयोजनों से क्लास में अपनापन बढ़ता है और पढ़ाई के प्रति ऊर्जा भी दोगुनी हो जाती है।

संस्थान के इस प्रयास की सभी ने सराहना की। श्रीकांत सर ने कहा कि भविष्य में भी इस तरह की गतिविधियां आयोजित की जाएंगी ताकि प्रशिक्षु शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकें।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर, बरेली में रोचक “ब्रेन एक्टिविटी” का आयोजन

बरेली। श्री श्रीकांत मिश्रा के मार्गदर्शन एवं संचालन में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), फरीदपुर, बरेली में प्रशिक्षुओं के लिए एक रोचक एवं मनोरंजक मानसिक गतिविधि (Brain Activity) का आयोजन किया गया। इस गतिविधि का उद्देश्य प्रशिक्षुओं की एकाग्रता, सुनने की क्षमता, त्वरित निर्णय लेने की योग्यता तथा मानसिक लचीलापन विकसित करना था। गतिविधि के दौरान सभी प्रशिक्षुओं को गोलाकार (सर्कल) में खड़ा किया गया। प्रारंभ में प्रशिक्षक ने निर्देश दिया कि “वॉक” कहने पर सभी को चलना है और “स्टॉप” कहने पर रुकना है। कुछ राउंड के बाद नियम बदल दिए गए। अब “स्टॉप” कहने पर चलना था और “वॉक” कहने पर रुकना था। इसी प्रकार “डांस” कहने पर ताली बजानी थी और “क्लैप” कहने पर डांस करना था। नियमों में अचानक बदलाव होने से प्रशिक्षुओं को ध्यानपूर्वक सुनना और तुरंत सही प्रतिक्रिया देना पड़ा। सभी प्रशिक्षुओं ने पूरे उत्साह और आनंद के साथ गतिविधि में भाग लिया। यह गतिविधि न केवल मनोरंजक रही, बल्कि इससे प्रशिक्षुओं की ध्यान क्षमता, स्मरण शक्ति, त्वरित सोच, निर्देशों का पालन करने की क्षमता तथा आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई। अंत में प्रशिक्षक ने बताया कि ऐसी गतिविधियाँ सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, रोचक एवं आनंददायक बनाती हैं।

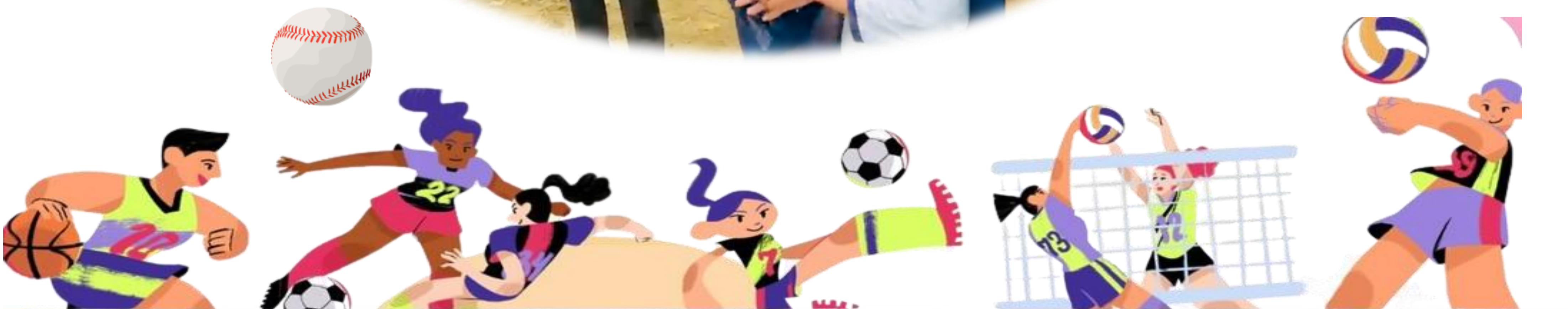

नये सेशन की नई शुरुआत: वन्यजीव विशेषांक!

हमारे मंथली बुलेटिन के इस विशेषांक में आपका स्वागत है। इस बार हमारा यह "Educational Trivia" कॉलम सिर्फ कॉलेज डेज़ के बौद्धिक ज्ञान, गणित और दिखावटी कसरत जोड़ना नहीं, बल्कि आपके भीतर छिपे मज़ेदार पहेलियों, अजब-गजब फैक्ट्स और प्रकृति प्रेम को जोड़े रखने कुछ बौद्धिक टास्क भी लाएगा। तो, इस सफर की शुरुआत करते हैं हमारे सबसे एक्साइटिंग सेगमेंट से!

मनो-मंथन: The Mind Lab

ROUND 1: आउट ऑफ़ द बॉक्स

क्या आप पारंपरिक सोच से हटकर कुछ अलग सोच सकते हैं? चलिए, इस वन्यजीव विशेषांक के सबसे बड़े तारे को अपनी बुद्धिमत्ता से जीतकर दिखाइए:

पहेली: "वह कौन सा पक्षी है जो अपना घोंसला कभी नहीं बनाता, चुपचाप दूसरे के घोंसले में अपने अंडे देता है, और उसकी आवाज़ वसंत ऋतु की पहचान बनती है?"

(संकेत: इसका उत्तर किसी भौतिक वस्तु में नहीं, बल्कि चतुर व्यवहार और परोपजीवी प्रजनन की आदत में छिपा है।)

ROUND 2: ज्ञानचक्षु-

इस महीने का विशेष विषय: वन्यजीव एवं पारिस्थितिकी (Wildlife & Ecology)

एक कुशल भावी शिक्षक वही है जिसकी मानसिक और पर्यावरणीय समझ प्रगाढ़ हो। इस महीने के विशेष विषय "वन्यजीव संरक्षण" की तैयारी को परखिए और नीचे दिए गए 4 प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए:

- **प्रश्न 1:** भारत के "बर्डमैन" (Birdman of India) के रूप में किस प्रसिद्ध प्रकृतिविद् को जाना जाता है?
  - (अ) सुंदरलाल बहुगुणा
  - (ब) सलीम अली
  - स) राजेंद्र सिंह
  - (द) इनमें से कोई नहीं
- **प्रश्न 2:** भारत का सबसे पहला राष्ट्रीय उद्यान (National Park) कौन सा है, जिसकी स्थापना 1936 में हुई थी?
  - (अ) जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान
  - (ब) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
  - (स) गिर राष्ट्रीय उद्यान
  - (द) बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान
- **प्रश्न 3:** 'इकोलॉजी' (Ecology) या पारिस्थितिकी शब्द का सबसे पहले प्रयोग किस वैज्ञानिक ने किया था?
  - (अ) चार्ल्स डार्विन
  - (ब) ए.जी. टांसले
  - (स) अर्नस्ट हेकेल
  - (द) ई.ओ. विल्सन
- **प्रश्न 4:** वन्यजीव संरक्षण अधिनियम (Wildlife Protection Act) भारत में किस वर्ष लागू किया गया था?
  - (अ) 1952
  - (ब) 1972
  - (स) 1986
  - (द) 1992

पिछली बुलेटिन के 'स्टार डिटेक्टिव' है

1. ख़ुशी सिंह
2. कृष्ण पाल
3. कृतिका तिवारी

STAR DETECTIVE

ROUND: 3

कैंपस डिटेक्टिव: वन्यजीव विशेषांक क्विज

The Profile File: #003

***नियम एवं निर्देश:* नीचे** दिए गए जीव-संकेतों को ध्यान से पढ़ें और अंदाज़ा लगाएं कि यह महान वन्यजीव संरक्षणवादी या पक्षी विज्ञानी कौन हैं। अपना सही उत्तर नीचे दिए गए लिंक/क्यूआर कोड (QR Code) के माध्यम से फॉर्म भरकर सबमिट करें! सबसे पहले सही जवाब देने वाले 3 विजेताओं के नाम अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

आपके लिए संकेत (Clues):

- **संकेत 1:** मुझे भारत में पक्षी विज्ञान (Ornithology) को लोकप्रिय बनाने और देश के पहले व्यवस्थित सर्वे करने का गौरव प्राप्त है। मैंने अपना पूरा जीवन पक्षियों और प्राकृतिक आवासों को संरक्षित करने में समर्पित कर दिया।
- **संकेत 2:** मैंने अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा *"द फॉल ऑफ़ ए स्पैरो" (The Fall of a Sparrow)* लिखी, जिसमें पर्यावरण और वन्यजीवों के प्रति मेरा संघर्ष साफ़ झलकता है।
- **संकेत 3:** बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS) के साथ मेरा गहरा नाता था, और गोवा में मेरे नाम पर एक प्रसिद्ध पक्षी अभयारण्य (Bird Sanctuary) भी स्थित है।

- **जवाब कैसे दें? (Scan & Win!)**

1. नीचे दिए गए **QR Code** को अपने फोन से स्कैन करें।
2. गूगल फॉर्म में अपना नाम दर्ज करें।
3. अपना सही उत्तर लिखकर सबमिट कर दें!

कविता सिंह डी.एल.एड 2025

नाथ नगरी बरेली : आस्था की पहचान

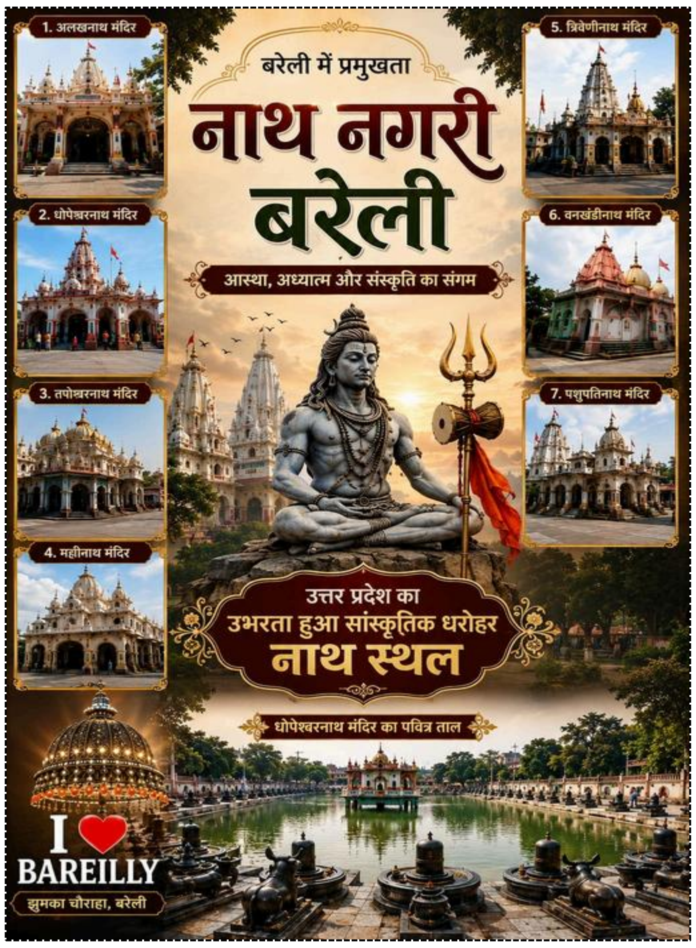

उत्तर प्रदेश का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक नगर बरेली अपनी समृद्ध आध्यात्मिक विरासत के कारण पूरे भारत में "नाथ नगरी" के नाम से प्रसिद्ध है। यह केवल एक नाम नहीं, बल्कि सदियों पुरानी नाथ परंपरा, योगसाधना और शिवभक्ति का जीवंत प्रतीक है।- **नाथ संप्रदाय** के सिद्ध योगियों और संतों ने इस भूमि को अपनी तपस्या एवं आध्यात्मिक साधना से पवित्र बनाया, जिसके कारण बरेली भारतीय **संस्कृति और सनातन** परंपरा का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।

बरेली की पहचान उसके प्राचीन नाथ एवं शिव मंदिरों से और भी सशक्त होती है। अलखनाथ, धोपेश्वरनाथ, तपेश्वरनाथ, मढ़ीनाथ, त्रिवटीनाथ, वनखंडीनाथ तथा पशुपतिनाथ जैसे मंदिर न केवल श्रद्धा के केंद्र हैं, बल्कि नगर की ऐतिहासिक एवं **सांस्कृतिक** धरोहर के अमूल्य प्रतीक भी हैं। **महाशिवरात्रि, श्रावण मास** और अन्य धार्मिक पर्वों पर देशभर से लाखों श्रद्धालु यहाँ दर्शन एवं पूजाहैं। राज्य सरकार एवं अर्चना के लिए आते-स्थानीय प्रशासन द्वारा इन मंदिरों के संरक्षण, सौंदर्यीकरण, स्वच्छता तथा पर्यटन सुविधाओं के विकास पर निरंतर कार्य किया जा रहा है, जिससे बरेली **धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र** के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है।

– प्रमुख नाथ मंदिर एवं उनकी विशेषताएँ : -

- **अलखनाथ मंदिर** — नाथ संप्रदाय की प्रमुख पीठ एवं गुरु गोरखनाथ परंपरा का केंद्र।
- **धोपेश्वरनाथ मंदिर** — प्राचीन शिव मंदिर एवं सावन मेले का प्रमुख तीर्थ।
- **तपेश्वरनाथ मंदिर** — ऋषियों की तपस्थली और शांत आध्यात्मिक स्थल।
- **मढ़ीनाथ मंदिर** — बरेली के प्राचीन धार्मिक स्थलों में प्रमुख।
- **त्रिवटीनाथ मंदिर** — प्राचीन शिवलिंग एवं श्रावण जलाभिषेक के लिए प्रसिद्ध।
- **वनखंडीनाथ मंदिर** — प्राकृतिक वातावरण में स्थित ध्यान एवं साधना का केंद्र।
- **पशुपतिनाथ मंदिर** — भगवान शिव के पशुपति स्वरूप को समर्पित प्रसिद्ध मंदिर

शिवांग शर्मा (डी.एल.एड 2025)

रबड़ फैक्ट्री

(कभी थी हजारों के रोजगार का मार्ग)

बरेली के **फतेहगंज पश्चिमी** स्थित सिंथेटिक एंड केमिकल्स लिमिटेड की स्थापना वर्ष 1962 में हुई थी। यह कभी एशिया की सबसे बड़ी सिंथेटिक रबर फैक्ट्रियों में गिनी जाती थी और देश में **सिंथेटिक रबर** की प्रमुख आपूर्तिकर्ता थी। इस उद्योग से लगभग **20 हजार लोगों** की आजीविका जुड़ी हुई थी। इसकी स्थापना मुंबई के उद्योगपति **तुलसीदास किलाचंद** ने अमेरिका से फैक्ट्री व मशीनरी लाकर लगभग **1270 एकड़** भूमि पर की थी।

15 जुलाई 1999 को कार्यशील पूंजी (वर्किंग कैपिटल) की कमी का हवाला देकर फैक्ट्री बंद कर दी गई, जिसके बाद हजारों कर्मचारी बेरोजगार हो गए। तब से यह विशाल परिसर धीरे-धीरे खंडहर में बदल गया। कर्मचारियों के लगभग **600 करोड़ रुपये के बकाया भुगतान** को लेकर लंबे समय तक कानूनी विवाद चलता रहा। वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार इस परिसर का लंबित भुगतान निपटाकर इसे नए **औद्योगिक हब** के रूप में विकसित करने की योजना पर विचार कर रही है।

हिमानी (डी.एल.एड 2025)

बरेली का गौरव : IVRI और ICAR

बरेली के इज्जतनगर स्थित **भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (IVRI)** देश के **सबसे प्रतिष्ठित पशु अनुसंधान संस्थानों** में से एक है। इसकी स्थापना 1889 में पुणे में इम्पीरियल बैक्टीरियोलॉजिकल लेबोरेटरी के रूप में हुई थी। वर्ष 1893 में इसे मुक्तेश्वर (उत्तराखंड) स्थानांतरित किया गया तथा 1913 में इसका मुख्य परिसर बरेली के **इज्जतनगर** में स्थापित हुआ। बाद में 1947 में इसका निदेशालय भी यहीं स्थानांतरित कर दिया गया। 1983 में **(IVRI)** को **डीम्ड विश्वविद्यालय** का दर्जा प्राप्त हुआ। संस्थान के परिसर में लगभग 10 एकड़ में विकसित **(IVRI मिनी ज़ू)** भी है।है।

इसी परिसर के निकट स्थित **केंद्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान (CARI)** की स्थापना 2 नवंबर 1979 को **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)** के अधीन हुई। यह संस्थान कुक्कुट विज्ञान, पक्षी आनुवंशिकी, प्रजनन, पोषण, जैव प्रौद्योगिकी तथा पक्षी स्वास्थ्य पर अनुसंधान, शिक्षा, प्रशिक्षण और परामर्श सेवाएँ प्रदान करता है। आज **IVRI** और **CARI** अपने उत्कृष्ट अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से न केवल भारतीय पशुपालन और पोल्ट्री उद्योग को नई दिशा दे रहे हैं, बल्कि बरेली की वैज्ञानिक पहचान और गौरव को भी राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित कर रहे हैं।

गुनगुन (डी.एल.एड 2025)

आयुषी, डीएलएड 2025

वन्यजीव विशेष

हरा-भरा हो अपना देश,
पेड़ लगाना है संदेश।
नदियाँ स्वच्छ, गगन हो नीला,
प्रकृति का हर रंग है रंगीला।
जंगल, पशु और पक्षी प्यारे,
इनसे हैं संसार हमारे।
वन्यजीवों की करो रक्षा,
यही है मानव की सच्ची
इच्छा।
आओ मिलकर शपथ ये लें,
धरती माँ को स्वच्छ रखें।
पर्यावरण का मान बढ़ाएँ,
हरियाली से जग महकाएँ।

तय्यबा, डीएलएड 2025

नीतू सैनी, डीएलएड 2025

कविता सिंह, डीएलएड 2025

क्या आप जानते हैं?

- वन्यजीवों और उनके आवासों की सुरक्षा ही वन्यजीव संरक्षण है।
- प्राकृतिक आवासों के नष्ट होने से केवल वन्यजीव ही नहीं, बल्कि हमारा पूरा जल चक्र और जलवायु भी प्रभावित होती है।
- बच्चों में प्रकृति के प्रति संवेदना जगाने की सबसे प्रभावी शुरुआत उनके आसपास के स्थानीय पक्षियों और पेड़ों की पहचान से होती है।

कविता सिंह, डीएलएड 2025

जंगल का जीवन रहे सदा सुरक्षित मित्र, पृथ्वी के हित में यही है हरा-भरा वनचित्र।

प्रकृति का ब्रेन बूस्टर: दिमागी बीमारियों के इलाज में क्रांति लाता एक अनोखा पौधा

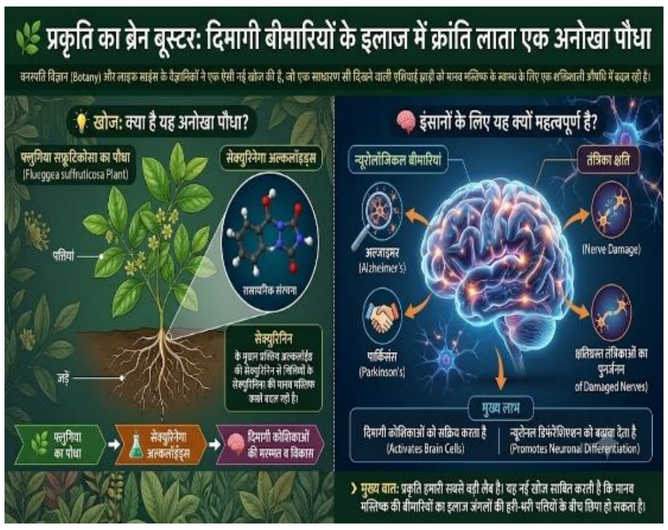

वनस्पति विज्ञान (Botany) और लाइफ साइंस के वैज्ञानिकों ने एक ऐसी नई खोज की है, जो एक साधारण सी दिखने वाली एशियाई झाड़ी को मानव मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए एक शक्तिशाली औषधि में बदल रही है।

❢ क्या है यह नई खोज?

पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग किए जाने वाले पौधे ***Flueggea suffruticosa*** पर अध्ययन करते हुए वैज्ञानिकों ने इसके अंदर छिपे दुर्लभ और जटिल रासायनिक यौगिकों–**सेक्युरिनेगा अल्कलॉइड्स (Securinega Alkaloids)**–की पहचान की है।

यह प्राकृतिक अणु मस्तिष्क के लिए एक अद्भुत काम करते हैं: यह हमारी दिमागी कोशिकाओं (Brain Cells) को सक्रिय करते हैं और **न्यूरोनल मरम्मत (Nerve Cell Repair)** की प्रक्रिया को तेज करते हैं।

फ्लुगिया का पौधा → सेक्युरिनेगा अल्कलॉइड्स → दिमागी कोशिकाओं की मरम्मत व विकास

इंसानों के लिए यह क्यों महत्वपूर्ण है?

यह खोज प्राचीन वनस्पति ज्ञान और आधुनिक मेडिकल साइंस को आपस में जोड़ती है। इससे इंसानों के लिए कई तरह की दवाएं बनाने का रास्ता साफ हो गया है:

न्यूरोलॉजिकल बीमारियां: अल्जाइमर (Alzheimer's) और पार्किंसंस (Parkinson's) जैसी घातक दिमागी बीमारियों के इलाज के लिए यह बेहद मददगार साबित हो सकता है।

तंत्रिका क्षति (Nerve Damage): यह क्षतिग्रस्त तंत्रिका मार्गों (Damaged Nerves) और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को सुधारने में मदद करता है।

मुख्य बात: प्रकृति हमारी सबसे बड़ी लैब है। यह नई खोज साबित करती है कि मानव मस्तिष्क की बीमारियों का इलाज जंगलों की हरी-भरी पत्तियों के बीच छिपा हो सकता है।

अनुज सिंह (डी.एल.एड 2025)

स्मार्ट टेलीमेट्री और IoT: मानव-वन्यजीव संघर्ष का समाधान

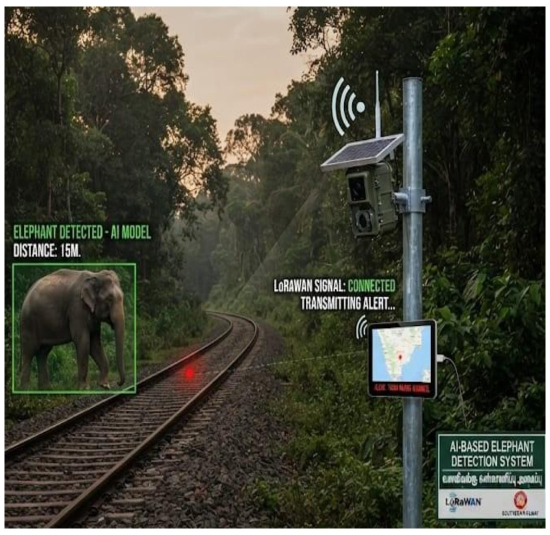

जंगलों के सिकुड़ने से इंसानों और वन्यजीवों का आमना-सामना बढ़ गया है। इस गंभीर चुनौती से निपटने के लिए पर्यावरणविद् स्मार्ट टेलीमेट्री और IoT जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं:

जीपीएस कॉलर और सेंसर: हाथियों और बाघों जैसे बड़े वन्यजीवों के गले में जीपीएस कॉलर और जंगलों की सीमाओं पर स्मार्ट सेंसर लगाए जाते हैं।

जियोफेंसिंग और ऑटोमैटिक अलर्ट: बस्तियों के पास डिजिटल बाउंड्री (Geofencing) बनाई जाती है। जानवर के सीमा के पास आते ही IoT सेंसर सक्रिय हो जाते हैं, जिससे ग्रामीणों और वन विभाग को तुरंत एसएमएस या सायरन के जरिए चेतावनी मिल जाती है।

तमिलनाडु और केरल का हालिया उदाहरण: वन विभाग ने रेलवे ट्रैक और बस्तियों के पास हाथियों की आवाजाही ट्रैक करने के लिए एआई-सक्षम कैमरों और LoRaWAN कनेक्टिविटी का उपयोग शुरू किया है, जिससे ट्रेन दुर्घटनाओं और टकराव को प्रभावी ढंग से रोका जा रहा है।

मुख्य लाभ: समय पर मिलने वाली यह चेतावनी इंसानों और मवेशियों की रक्षा करती है और वन्यजीवों को भी सुरक्षित रखते हुए सह-अस्तित्व को बढ़ावा देती है।

कविता सिंह (डी.एल.एड 2025)

प्रलय मिसाइल

यह इन्फोग्राफिक प्रलय मिसाइल के बारे में है, जो भारत द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित एक सतह से सतह पर मार करने वाली अर्ध-बैलिस्टिक (Quasi-Ballistic) मिसाइल है। **मुख्य विशेषताएं (Key Features):**

अर्ध-बैलिस्टिक प्रक्षेपवक्र (Quasi-Ballistic Trajectory): यह मिसाइल हवा में अपना रास्ता बदल सकती है, जिससे दुश्मन के लिए इसे रोकना या मार गिराना बेहद मुश्किल (Hard to Intercept) हो जाता है।

मारक क्षमता (Range): इसकी मारक सीमा 150 किलोमीटर से 500 किलोमीटर तक है।

ठोस ईंधन (Solid Propellant): ठोस ईंधन तकनीक के कारण यह मिसाइल तुरंत लॉन्च के लिए हमेशा तैयार (Rapid Launch Ready) रहती है।

एकाधिक हथियार क्षमता (Multiple Warhead Capability): यह विभिन्न प्रकार के पारंपरिक हथियारों और पेलोड को ले जाने में सक्षम है।

न्नत क्षमताएं (Advanced Capabilities):

उन्नत मार्गदर्शन प्रणाली (Advanced Guidance System): यह आधुनिक नेविगेशन सिस्टम से लैस है जो पिनपॉइंट सटीकता के साथ सटीक हमला (High Accuracy Strike) सुनिश्चित करता है।

साल्वो लॉन्च क्षमता (Salvo Launch Capability): एक ही लॉन्चर से एक के बाद एक कई मिसाइलों को बेहद कम समय के अंतराल में (Quick Successive Launch) दागा जा सकता है।

काजल (डी.एल.एड 2025)

डीएनए राइटिंग चिप

डीएनए राइटिंग चिप एक नई सिलिकॉन माइक्रोचिप है, जिसे वैज्ञानिकों ने डीएनए (DNA) को पहले की तुलना में काफी तेज़, सटीक और कम लागत में बनाने (लिखने) के लिए विकसित किया है।

क्या है यह तकनीक?

पारंपरिक तरीके से DNA बनाने में कई दिन या सप्ताह लग सकते हैं।

DNA Writing Chip एक ही समय में हजारों DNA अनुक्रम (Sequences) तैयार कर सकती है।

इससे जैव-प्रौद्योगिकी (Biotechnology) और चिकित्सा अनुसंधान में तेजी आएगी।

मुख्य उपयोग

नई दवाओं (Drug Discovery) के विकास में।

जीन थेरेपी (Gene Therapy) के शोध में।

वैक्सीन (Vaccines) बनाने में।

कृत्रिम जीवविज्ञान (Synthetic Biology) में।

सचिन (डी.एल.एड 2025)

शिक्षकों के लिए आधुनिक शिक्षण तकनीक

ई-पाठशाला (ePathshala) ऐप भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय (Ministry of Education) और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा शुरू की गई एक डिजिटल पहल है। इसका मुख्य उद्देश्य देश के शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों को एक ही मंच पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिणिक सामग्री उपलब्ध कराना है। विशेष रूप से शिक्षकों के लिए, यह ऐप एक शक्तिशाली सहायक टूल के रूप में कार्य करता है, जो उन्हें आधुनिक और प्रभावी तरीकों से पढ़ाने में सक्षम बनाता है।

शिक्षकों के लिए ई-पाठशाला ऐप का महत्व

पारंपरिक शिक्षण व्यवस्था में शिक्षकों को अक्सर संदर्भ पुस्तकों, शिक्षण गाइडों और भारी-भरकम स्टडी मटेरियल को साथ लेकर चलना पड़ता था। ई-पाठशाला ऐप ने इस पूरी प्रक्रिया को डिजिटल और आसान बना दिया है। इस ऐप की मदद से शिक्षक किसी भी समय और कहीं भी अपनी उंगलियों पर संपूर्ण पाठ्यक्रम और सहायक सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। यह ऐप हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू जैसी भाषाओं में उपलब्ध है, जिससे विभिन्न माध्यमों के शिक्षकों को पढ़ाने में कोई परेशानी नहीं होती।

ऐप की मुख्य विशेषताएं और शिक्षकों को लाभ

एनसीईआरटी (NCERT) पुस्तकों तक असीमित पहुंच: शिक्षक कक्षा 1 से 12वीं तक की सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकें मुफ्त में पढ़ और डाउनलोड कर सकते हैं।

मल्टीमीडिया सामग्री का भंडार: ऐप पर केवल टेक्स्ट ही नहीं, बल्कि विषयों को गहराई से समझाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक वीडियो, ऑडियो क्लिप और एनिमेशन उपलब्ध हैं।

टीचर्स गाइड और सप्लीमेंट्री मटेरियल: शिक्षकों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई शिक्षण मार्गदर्शिकाएं (Teacher Handbooks) उपलब्ध हैं, जो पाठ योजना (Lesson Planning) बनाने में मदद करती हैं

ऑफ़लाइन रीडिंग की सुविधा: डाउनलोड की गई पुस्तकों और सामग्री को बिना इंटरनेट कनेक्शन के भी पढ़ा जा सकता है। यह सुविधा ग्रामीण या कम नेटवर्क वाले क्षेत्रों के शिक्षकों के लिए वरदान है।

स्मार्ट लर्निंग टूल्स: ऐप में पढ़ते समय टेक्स्ट को हाइलाइट करने, व्यक्तिगत नोट्स (Notes) बनाने, फॉन्ट का आकार बदलने और महत्वपूर्ण पेजों को बुकमार्क करने की सुविधा है।

फ्लिपबुक फॉर्मेट: डिजिटल पुस्तकें बिल्कुल असली किताब की तरह पन्ने पलटने (Flipbook) के अनुभव के साथ खुलती हैं, जिससे पढ़ना और पढ़ाना आसान हो जाता है।

शिक्षक इस ऐप का उपयोग कैसे करें?

ई-पाठशाला ऐप का इंटरफ़ेस बेहद सरल और यूज़र-फ्रेंडली है। शिक्षक नीचे दिए गए चरणों का पालन करके इसका लाभ उठा सकते हैं:

1. **ऐप इंस्टॉल करें:** सबसे पहले गूगल प्ले स्टोर (Google Play Store) या एप्पल ऐप स्टोर से 'ePathshala' ऐप डाउनलोड करें।
2. **प्रोफ़ाइल चुनें:** ऐप खोलने पर आपको चार विकल्प मिलेंगे (Student, Teacher, Parent, Educator)। यहाँ आपको **'Teacher' (शिक्षक)** पर क्लिक करना होगा।
3. **पंजीकरण:** अपना नाम, राज्य और स्कूल का विवरण दर्ज करके अपनी प्रोफ़ाइल सेट करें।
4. **सामग्री खोजें:** इसके बाद आप अपनी इच्छानुसार कक्षा, विषय और भाषा (जैसे हिंदी) का चयन करके ई-पुस्तकों (e-books) या ऑडियो/वीडियो सामग्री को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

कृतिका तिवारी
आदर्श शर्मा
अनमोल
डी.एल.एड 2025-27

डाएट बुलेटिन

बुलेटिन टीम

DIET MONTHLY BULLETIN
नवाचार | ज्ञान | शिक्षा | प्रेरणा

- **मुख्य संरक्षक:**
श्री पार्थ सारथी सेन शर्मा, अपर मुख्य सचिव, वित्त, माध्यमिक शिक्षा एवं बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।
- **प्रेरणा:**
श्रीमती मोनिका रानी, महानिदेशक, स्कूल शिक्षा / राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
- **मार्गदर्शक:**
श्री गणेश कुमार, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
- **प्रोत्साहन:**
डॉ० पवन कुमार, संयुक्त निदेशक (एस०एस०ए०), राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
- **निर्देशन:**
श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय, प्राचार्य, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली।
- **सहयोग:**
श्री मनोज कुमार, वरिष्ठ प्रवक्ता, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली।
- **संपादक एवं समन्वय:**
डॉ फ़हमीना, प्रवक्ता, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली।
- **संपादकीय मंडल—**
श्री कृष्ण कुमार, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
श्रीमती अर्चना, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
श्री श्रीकान्त मिश्रा, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
डॉ0 रूबी, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
श्रीमती वंदना सहाय , प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
- **प्रशिक्षु समन्वयक एवं डिजिटल सपोर्ट टीम —**

अरबाब रजा खां, प्रशिक्षु, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।

कविता सिंह, प्रशिक्षु, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।

- **प्रशिक्षु संपादकीय मंडल टीम —**

मो सादान
अनुज सिंह
शिवंम यादव
आदर्श शर्मा
शिवांग शर्मा
तरन्नुम
फहमीना
अंजुम बी
हिमानी
अनमोल
कृतिका तिवारी
सानिया अंसारी
खुशी
सुप्रीत
अंशू
शाहनूर
सताक्षी गंगवार
तय्यबा
गुनगुन
अनू तोमर
रानी यादव
आयुषी